The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

हनुमानगढ़ जिले में पर्यावरणीय समस्याएं एवं उनके समाधान के सुझाव

डॉ महेश कुमार
सहायक आचार्य भूगोल, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
महेन्द्र कुमार
शोध छात्र, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20692079

ARTICLE DETAILS

Research Paper
Accepted: 28-05-2026
Published: 10-06-2026

Keywords:
वायुमंडल, पर्यावरण, समस्या, सुझाव।

ABSTRACT

हमारे भू–मंडल के वायुमंडल और पर्यावरण में लगातार बदलाव हो रहा है और नित्य प्रतिदिन तापमान और मौसम में बदलाव हो रहा है, उससे मानव जीवन खतरे में पड़ता जा रहा है। अब पर्यावरण शिक्षा सभी के लिए जरूरी हो गयी है। पर्यावरण शिक्षा उस विशिष्ट शिक्षा को कहते है जो जन–समुदाय को पर्यावरण जानकारियों से परिचित कराकर पर्यावरण बोध को पुष्ट करती है, पर्यावरण कठिनाइयों के कारण निवारण का मार्ग ढूंढती है तथा भविष्य की कठिनाइयों से आगाह कर जीवन को निरापद बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। वहीं पर्यावरण शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः विश्व समुदाय को पर्यावरण सम्बन्धी दी जाने वाली वह शिक्षा है जिससे समस्याओं से अवगत होकर उनका समाधान ढूंढने और भविष्य में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों की रोकथाम के लिये आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर पर्यावरण समस्याओं से निजात पाने का मार्ग ढूंढा जा सकता है और भविष्य की कठिनाइयों को जाना जा सकता है। आज पर्यावरण से ही हर व्यक्ति जीवजंतु एंव वनस्पतियो को जीवन मिल रहा है, परंतु पर्यावरण की स्थिति ऐसी हो गई है कि जिसे संभालना बहुत मुश्किल हो गया है। प्रस्तुत शोध आलेख वर्तमान में पर्यावरण की कौन–कौन सी समस्याएं हैं और उसका निराकरण एवं समाधान कैसे किया जाये के उद्देश्य से प्रस्तुत है। आज पर्यावरणीय समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, वैश्विक ताप, समुद्र प्रदूषण, ओजान परत का क्षतिग्रस्त होना, अपशिष्ट विघटन, जैव विविधता मे कमी आदि समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिसका समाधान एवं निराकरण अति

आवश्यक हो गया है।

पर्यावरण का अर्थ –

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के 'परि' उपसर्ग (चारों ओर) और 'आवरण' से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से घेरे हुए हैं। हिन्दी शब्द पर्यावरण का 'परि' तथा 'आवरण' शब्दों का युग्म है। 'परि' का अर्थ चारो तरफ व 'आवरण' का अर्थ घेरा हैं। अर्थात् प्रकृति में जो भी चारों ओर परिलक्षित हैय यथाकृवायु, घन, मृदा, पेड़ तथा पौधे तथा प्राणी सभी पर्यावरण के अंग हैं।

पर्यावरण की परिभाषाएँ –

वुडवर्थ के अनुसार, पर्यावरण शब्द का अर्थ उन सभी गहरी शक्तियों एवं तत्त्वों से है जो व्यक्ति को आजीवन प्रभावित करते हैं।

सी. सी. पार्क के अनुसार, "मनुष्य एक विशेष स्थान पर विशेष समय पर जिन सम्पूर्ण परिस्थितियों से घिरा हुआ है उसे पर्यावरण कहा जाता है। "

पर्यावरण अध्ययन परिवेश के सामाजिक और भौतिक घटकों को अन्तक्रियाओं का अपमान घटक मिलकर ही हमारे सम्पूर्ण परिवेश का निर्माण करते हैं। सामाजिक घटकों में संस्कृति जिसक अन्तर्गत भाषा, मूल्य, दर्शन, आदि आते हैं तथा प्राकृतिक घटकों में हवा, पानी, मिट्टी, धूप, पशु–पक्षी, खनिज लवण, जंगल, वनस्पति, इत्यादि शामिल हैं। पर्यावरण अध्ययन में हम एक और मानव एवं निर्मित समाज का अध्ययन करते हैं। दूसरी ओर प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों तथा उनकी कार्य प्रणाली का अध्ययन किया जाता है।

हनुमानगढ़ जिले का परिचय :–

राजस्थान स्वतंन्त्रता प्राप्ति से पूर्व अनेक छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था। मुख्य रूप से यहां छोटी–छोटी रियासतें थी। स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार पटेल के प्रयत्नों से राजस्थान के 22 देसी रियासतों का एकीकरण कार्य सम्पन्न हुआ तथा 30 मार्च 1949 को राज्य पूर्नगठन आयोग द्वारा नाम दिया गया "राजस्थान"। राजस्थान का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर 1956 में निर्मित हुआ और उसी समय से इसे राज्य का दर्जा दिया गया। इतिहास में भी राजस्थान अपना स्थान रखता है। यहां के महापुरूषो ने साहस, पराक्रम, वीरता और बलिदान के आदर्श प्रस्तुत किया।

आज से 67 वर्ष पूर्व के राजस्थान और आज के राजस्थान में अत्याधिक अन्तर आ गया है। इसमें पानी का पूर्णतया अभाव था। अब धीरे–धीरे पानी पीने को व सिंचाई दोनों को मिलने लगा है। राजस्थान नहर परियोजना के द्वारा अत्यधिक पिछड़े क्षेत्र में भी पानी मिलने लगा है। राष्ट्रीय नीति के अनुरूप समाजिक एवं आर्थिक

कार्यक्रमों को प्रदेश में लागू कर गरीब अनुसूचित जाति व जनजातियों के जीवन स्तर को उंचा उठाने और प्रदेश को खुशहाल बनाने का दृढ़ संकल्प राज्य सरकार ने किया है। चारों और लहलहाते खेतों के बीच आज जहां हनुमानगढ़ है इस क्षेत्र में प्राचीनकाल में शिवालिक पहाड़ियों से निकली सरस्वती एवं अनेक नदिया बहती थी। इन नदियों के मध्य यह क्षेत्र, ब्रहावती कहलाता था। मनुस्मृति में इसे देव निर्मित बतलाया गया है वेदों की अनेक रचनाओं तथा कई ब्रहमण ग्रंथों की रचना इसी क्षेत्र में हुई। सरस्वती घाटी के इस क्षेत्र में अनेक सभ्यताएं फली–फूली। इस प्रकार हनुमानगढ़ क्षेत्र बहुत पहले से ही समृद्ध रहा है। बीकानेर स्टेट का हनुमानगढ़ ही एक ऐसा क्षेत्र था। जहां साल में दो बार फसलें हुआ करती थी। स्टेट के सेम क्षेत्र इस मामलें में हनुमानगढ़ से पीछे थे। इस खुशहाली का कारण पुराने समय से लेकर अब तक घग्घर नदी प्राचीन सरस्वती रही। यहां के इतिहासिक भटनेर दुर्ग का छुकर गुजरने वाली यह नदी सदैव सम्पूर्ण क्षेत्र के लिए वरदान साबित हुई है।

हनुमानगढ़ राजस्थान के उतर में स्थित है जो कि 29॰5′ से 30॰6′ उतरी आकांश में 74॰3′ से 75॰3′ पूर्वी देशान्तरो के मध्य स्थित है। हनुमानगढ़ 12 जुलाई 1994 को अस्तित्व में आया था इससे पहले यह श्रीगंगानगर की मुख्य तहसील के रूप में था जब हनुमानगढ़ राजस्थान का 31 वां जिला बना था तब हनुमानगढ़ में तीन उपखण्ड एवं सात तहसीलों में बांटा गया था। वर्तमान में हनुमानगढ़ के 7 उपखण्ड व 7 तहसीलें हैं, 7 विकास खण्ड़, 1831 आबाद गांव एवं 76 गैर आबाद गांव है तथा 6 कस्बे है। हनुमानगढ़ जिले का कुल क्षेत्रफल 9656.09 वर्ग किमी. है। जिसमें 2011 में 17,74,692 लोग निवास कर रहे है। जिसमें से ग्रामीण जनसंख्या 14,24,228 एवं शहरी जनसंख्या 3,50,464 । पुरूषों की कुल जनसंख्या 9,31,184 एवं महिलाओं की कुल जनसंख्या 8,43,508 निवास करती है। जिले का जनसंख्या घनत्व 184 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है तथा लिंगानुपात 906 है। जिले में साक्षरता अनुपात 2011 की जनगणना के अनुसार) 67.13 प्रतिशत रहा जो कि राजस्थान के साक्षरता प्रतिशतः 66.11 प्रतिशत) से अधिक है। जिले में 2011 में 77.41 प्रतिशत पुरूष की एवं 55.84 प्रतिशत स्त्रियों की साक्षरता दर रही।

जिला बने 26 वर्ष बीत गए लेकिन यहां प्रदूषण मापने का सिस्टम तक नहीं हनुमानगढ़ में वायु और जल प्रदूषण की जांच, प्रदूषण फैलाने वाली फैक्ट्रियों के खिलाफ भी सख्त कार्रवाई नहीं हो रही। पर्यावरण को स्वच्छ और साफ़ सुथरा रखने के लिए आमजन भी पेड़ पौधे लगाकर हर तरह से प्रयास करते हैं। चिंताजनक यह है कि पर्यावरण सुरक्षा को लेकर सरकार और प्रशासन दोनों ही ध्यान नहीं दे रहे हैं। 12 जुलाई 1994 को श्रीगंगानगर से अलग करके हनुमानगढ़ को राजस्थान का 31 वां जिला बनाया गया था। आपको यह जानकारी हैरानी होगी कि 26 वर्ष 10 महीने बीत गए लेकिन प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए आज तक कोई प्रयास नहीं किए गए। इतने वर्ष बाद भी यहां प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड का न तो कार्यालय बना है और न ही अधिकारियों की तैनाती हो सकी है। यह विडंबना ही है कि फैक्ट्रियों से लेकर शहर में रजिस्टर्ड 52 हजार से अधिक वाहन वर्षों से सड़कों पर दौड़ रहे हैं। लेकिन हवा, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण मापने के लिए हमारे पास किसी भी प्रकार का मॉनिटरिंग सिस्टम उपलब्ध नहीं है। यानी, हमें खुद भी नहीं पता कि जो पानी हमारी नहरों में आता है या जिस हवा में सांस ले रहे हैं वह शुद्ध है या नहीं। फैक्ट्री से निकलता धुंआ। एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार एक वाहन 960 किलोमीटर चलने पर

उतनी ऑक्सीजन को प्रदूषित कर देता है, जितना एक व्यक्ति एक साल में करता है। वाहन के धुएं में मौजूद सीसा या लेड, एक ऐसा जहर है जो नाडियों में इकट्ठा होकर, अनुवांशिक विकार पैदा करता है। सीसालेड, बड़ों की अपेक्षा, बच्चों को 5 गुना ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।

बीकानेर संभाग में ही प्रदूषण मापने का मॉनिटरिंग सिस्टम नहीं प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड उदयपुर, कोटा, जयपुर, अजमेर जैसी जगहों पर तो सिस्टम लगे हैं जहां रोजाना धूल, धुएं पानी आदि प्रदूषण की मॉनिटरिंग होती है। हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर सहित पूरे संभाग में ही प्रदूषण मापने के लिए कोई मॉनिटरिंग सिस्टम तक नहीं है। बिना इस सिस्टम के यह पता लगाना मुश्किल है की जिले में कितना प्रदूषित फैला है और इसे कैसे रोका जा सकता है। अभी नई योजना के तहत हर जिले में प्रदूषण मापक यंत्र लगाना है और इसपर काम चल रहा है। प्रदूषण मंडल फैक्ट्रियों को सिर्फ एनओसी देने तक सीमित, इंसानों के साथ पेड़ पौधों पर भी पड़ता है प्रदूषण का–प्रभाव जिला मुख्यालय स्थित रीको में ही 200 से अधिक फैक्ट्रियां हैं। इन फैक्ट्रियों से निकलने वाले प्रदूषण के स्तर को मापने के लिए पॉल्यूशन विभाग के पास ऑटोमेटिक मशीन तक नहीं है। ऐसे में प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड का काम भी महज फैक्ट्रियों को एनओसी देना ही रहा गया है। फैक्ट्रियों से निकलने वाले प्रदूषित जल से जिला मुख्यालय के लोग वर्षों से परेशान हैं लेकिन आज तक इसपर कोई कार्रवाई नहीं की गई। ये फैक्ट्रियां रोजाना हवा में कितना जहर घोल रही हैं इसका भी पता लगा पाना मुश्किल है। सिविल लाइंस सहित विभिन्न कॉलोनी के लोग बदबू और फैक्ट्रियां से निकलने वाली अजीब गंध से परेशान रहते हैं और यही गंध उनके फेफड़ों तक पहुंचती रहती है।

धुंए का दुष्प्रभाव केवल मनुष्यों को ही नहीं, बल्कि जीवजन्तुओं, पेड.पौधों, भूमि भवन पर पड़ता है। वाहनों से छोड़े गए धुएं में कार्बन मोनो ऑक्साइड लगभग 90 प्रतिशत तक हो सकती है। इससे दिमाग, फेफड़े, हृदय, गुर्दे और रक्त पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। फेफड़े के कैंसर और दमा जैसी बीमारियों का मूल कारण, वायु प्रदूषण ही है। इसकी मात्रा अधिकांश शहरों में आमतौर से बर्दाश्त की सीमा) 2000 माइक्रोग्रामप्रति घनमी/टरसे बहुत ज्यादा होती है। इसके अलावा नाइट्रोजन (, ऑक्साइड और हाइड्रोजन लोगों के श्वास के अलावा पेड़ पौधों को भी बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। वहीं फैक्ट्रियां भी जहरीला धुंआ शहर के वातावरण में ध्वनि प्रदूषण घुल रहा है। यह शोर हमारी सेहत पर भारी पड़ रहा है। ध्वनि प्रदूषण की वजह से हमारे कान कमजोर होते जा रहे हैं। दिमाग पर भी इसका बुरा असर हो रहा है। छोटेबड़े वाहनों में प्रेशर हॉर्न के इस्तेमाल आदि से आमजन, विद्यार्थी, मरीज, व्यवसायी सहित समाज का प्रायहर वर्ग परेशान है। शहरी क्षेत्र में चिड़चिड़ापन, बहरापन, ब्लड प्रेशर, तनाव, अनिद्रा जैसी बीमारियों के शिकार बढ़ रहे हैं और इसका कारण ध्वनि प्रदूषण ही है। जहां केवल 60 डेसिबल तक ध्वनि ही उचित मानी गई है, हनुमानगढ़ में यह आंकड़ा बेहद खतरनाक स्तर तक पहुंच रहा है। लेकिन इससे भी खराब हालात टाउन स्थित सिविल हॉस्पिटल पर हैं। इस जिला अस्पताल में 5–10 मरीज रोजाना ध्वनि प्रदूषण जनित बीमारियों के उपचार के लिए पहुंचते हैं, लेकिन वहीं पर ध्वनि प्रदूषण का स्तर 96 डेसिबल मापा गया। हालांकि बस स्टेंड के मुकाबले यह कुछ कम है, लेकिन अस्पताल साइलेंट जोन में आता है। ऐसे में मरीजों की शांति भंग हो रही

है। यही स्थिति शिक्षण संस्थाओ की भी है, जहां हमारे नोनिहाल साइलेंसर रहित वाहनो अथवा तेज हॉर्न के कारण पढ़ाई में ध्यान नहीं लगा पाते। जिला अस्पताल में हर दिन आ रहे बहरेपन की परेशानी के 5 से 10 मरीज मेडिकल एक्सपर्ट की मानें, तो प्रेशर हॉर्न के कारण लोगों में चिड़चिड़ापन और बहरेपन की समस्या बढ़ती जा रही है। जिला अस्पताल में लगभग 5 से 10 ऐसे मरीज इलाज के लिए पहुंचते हैं। इससे सबसे अधिक परेशानी बच्चों और बुजुर्गों को होती है। प्रेशर हॉर्न के कारण दिमाग में दबाव बनने लगता है, जिससे चिड़चिड़ापन बना रहता है। साथ ही सिरदर्द भी होने लगता है। ध्वनि प्रदूषण का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों एवं वृद्धों पर पड़ रहा है। इस संबंध में डाक्टरों का कहना है कि 80 डेसिबल से अधिक शोर चिड़चिड़ापन, बहरापन, ब्लड प्रेशर, तनाव, अनिद्रा जैसी बीमारी को जन्म देता है। 100 डेसिबल से अधिक का शोर हृदयाघात का कारण बन सकता है। ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए राज्य प्रदूषण नियंत्रण परिषद ने पैमाना निर्धारित कर रखा है। इसके बावजूद ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में सार्थक कदम नहीं उठाया जा रहा है।

हनुमानगढ़ जिले में पर्यावरणीय समस्याएं –

जनसंख्या वृद्धि – आज देश की जनसंख्या 121 करोड़ से भी अधिक हो गई है। प्राप्त संसाधनों की कमी से उत्पन्न समस्याओं जैसे भोजन, पानी, ईधन की कमी तथा सामाजिक समस्याओं जैसे अपराध, भुखमरी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य समस्याओं आदि का बढ़ना। परिवार कल्याण मंत्रालय की 1992 की रिपोर्ट से यह बात सामने आई कि 2025 तक भारत, चीन को पीछे छोड़कर संसार का सबसे जनसंख्या वाला राष्ट्र बन जाएगा।

प्रदूषण –

जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण की समस्या भी बढ़ गई है। वायु, जल, मृदा आदि के प्रदूषित होने के कारण जन सामान्य, जीव–जंतु एवं वनस्पति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। कई प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्या जन्म ले रही हैं एवं अनुमान के आधार पर व्यक्ति अपने आहार–विहार के साथ लगभग 24 मिलीग्राम विषैले तत्व रोज ग्रहण करता है। मृदा की भी उपजाऊ क्षमता क्षीर्ण हो रही है।

वैश्विक ताप वृद्धि –

इसके कारण पृथ्वी और समुद्र के तापक्रम में वृद्धि हो रही है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं। ब्रिटेन के अर्थशास्त्री निकोलस स्टर्न की रिपोर्ट के अनुसार सन् 2100 तक धरती के तापमान में 10 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक वृद्धि संभावित है। जिससे मौसम परिवर्तन के खतरे के साथ 30 प्रतिशत जमीन सूखा ग्रस्त हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार गंगोत्री ग्लेशियर अगले 20 से 30 सालों में समाप्त हो जाएगी। हरित ग्रह प्रभाव के संकट के कारण वायुमण्डल में ऊष्मा गैसों की वृद्धि हुई है। अम्लीय वर्षा की अधिकता हो रही है। ओजोन परत का क्षतिग्रस्त होना वायु मंडल में पायी जाने वाली ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों से रक्षा करती है। परंतु विषैली गैसें क्लोरीन एवं ब्रोमाइड के कारण उसमें छिद्र उत्पन्न हो गये हैं। और सूर्य से निकलने वाली

पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आ रही हैं जिससे कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक विकार, पेड़–पौधों और जीव–जंतुओं में व्याधियां उत्पन्न हो रही हैं।

अपशिष्ट विघटन –

यह एक गंभीर समस्या है क्योंकि प्लास्टिक, कचरा, नाभिकीय अपशिष्ट आदि का नष्ट न हो पाना कई प्रकार की समस्याएं जैसे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्या, पर्यावरण आदि संबंधित समस्याओं को जन्म दे रहा है। प्राकृतिक संसाधनों की दोहन आज व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग निर्दयता से कर रहा है जिसके परिणामस्वरुप जलस्तर में कमी, मृदा में विषैलेतत्वों की बढ़ोत्तरी, वायु एवं जल प्रदूषण जैसे समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार 2080 तक 3 अरब 20 करोड़ लोगों को पीने का पानी नहीं मिलेगा और महामारियों की वृद्धि के साथ उनसे निपटने के साधन कम होंगे।

जैव विविधता की कमी –

स्वयं के निवास हेतु जंगलों और वृक्षों की कटाई, पशवध, पशुपालन में कमी आदि अमानवीय कृत्यों के कारण परिस्थितकीय तंत्र में असंतुलन उत्पन्न हो गया है जिसका सीधा प्रभाव जीव जंतु और वनस्पति पर हुआ है, और पूर्व में पायी जाने वाली प्रजातियां धीरे–धीरे या तो विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। संकटग्रस्त प्रजातियों में काला हिरण, मगरमच्छ, भारतीय जंगली गधा आदि हैं। विलुप्त प्रजातियों में एशियाई चीता, गुलाबी सिरवाली बतख शामिल है, पक्षियों की संख्या के गिरावट एवं विस्थापन गंभीर समस्या बन गई है।

हनुमानगढ़ जिले में पर्यावरण अध्ययन का क्षेत्र पर्यावरण के प्रति सोच का आरम्भ कुछ प्रमुख घटनाओं के घटित होने के कारण हुआ है। आज हमारा पर्यावरण का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। हमारा रहन सहन एवं भौतिक वस्तुओं का अत्यधिक प्रयोग पर्यावरण के लिए अत्यधिक नुकसानदायक है। हम पर्यावरणीय पदार्थों को नहीं बचायेंगे तो हमारी आगामी पीढ़ी इन संसाधनों का प्रयोग नहीं कर पायेगी।

भारत मे प्राचीन काल से ही प्रकृति एवं पर्यावरण का अटूट संबंध रहा है, और धार्मिक ग्रंथों में प्रकृति को जो स्थान प्राप्त है वह अतुलनीय है। प्रकृति की सु रक्षा के लिये हमारी संस्कृति में अनेक प्रयास किये गये, सामान्य जन को प्रकृति से जोड़े रखने के लिये उसकी रक्षा, पूजन, विधान, संस्कार आदि को धर्म से जोड़ा गया। गौ एवं अन्य जानवरों का पूजन वंश रक्षा के लिये तथा विभिन्न नदियों, पेड़ों, पर्वतों का पूजन उसकी सु रक्षा और अस्तित्व को बनाने के लिये अति आवश्यक हो गया था। परंतु जैसे समय व्यतीत होता गया व्यक्तियों की विचारधारा, सोच, अभिवृत्ति, आस्था, भावों में परिवर्तन होता गया औ रव्यक्ति धीरे–धीरे स्वार्थी होता चला गया। प्रकृति को दोहन एवं क्षरण करता चला गया जिसका परिणाम आज हमारे सामने है। हमारा परिवेश जिसमे व्यक्ति, पेड़–पौधे एवं जीव–जंतु निवास करते हैं, पर्यावरण तो कहलाता है परंतु आज जो स्थिति उसकी है वह बहुत चिंतनीय एवं व्यथित करने वाली है। जिस पर्यावरण में रहकर व्यक्ति अपना स्वास्थ्य संवर्धन करता था वही आज उसके लिये अभिशाप हो

गया है। जिसके जिम्मेदार भी हम ही हैं। हमने स्वार्थवश स्वयं का विकास एवं प्रगति करने के लिये पर्यावरण के साथ खिलवाड़ किया है और उसके प्रदूषित किया है। जिसका दुष्प्रभाव आज व्यक्ति के जीवन में विभिन्न गंभीर बीमारियो, प्राकृतिक आपदा, जलवायु, परिवर्तन आदि के रुप में परिलक्षित हो रहा है। चाणक्य ने पर्यावरण की महत्व को स्पष्ट करते हुये कहा है कि किसी भी राज्य की स्थिरता पर्यावरण की स्वच्छता पर निर्भर करती है। चरक संहिता में भी स्पष्ट उल्लेख है कि स्वास्थ्य जीवन के लिये शुद्ध वायु, जल और मिट्टी आवश्यक कारक हैं। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण आज देश की गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, गंभीर शारीरिक रोग जैसे एड्स, कैंसर बगैरह उत्पन्न हो रहे हैं। राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय (एम.एस.एस.ओ.) के सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2011–12 में देश में गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या 26 करोड़ 94 लाख थी इसी प्रकार केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय नई दिल्ली (2015) की रिपोर्ट के अनुसार एच आई बी /एड्स पीड़ितो की संख्या महाराष्ट्र में 1 लाख 59 हजार 25 रोगी हैंऔर यह राज्य देश में एड्स रोगियो की कुल संख्या के आधार पर प्रथम स्थान पर है। इसके बाद दूसरा स्थान आंध्रप्रदेश का है जहां 1 लाख 31 हजार 892 एड्स रोगी हैं। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक का यह नैतिक कर्तव्य है कि पर्यावरण को सुरक्षित तथा संरक्षित कर नैतिकता का परिचय दें।

जल प्रदुषण :–

पंजाब में व्यास नदी में शुगर मिल का लाखों टन शीरा और अन्य अपशिष्ट बहने से प्रदूषित हुआ पानी राजस्थान की तीन प्रमुख नहरों इंदिरा गांधी नहर, भाखड़ा और गंगनहर में आने लगा है। लालिमा लिए गहरे मटमैले रंग के इस पानी को देख आमजन में दहशत का माहौल है। इस पानी के सेवन से महामारी फैलने की आशंका के चलते जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में सभी जलदाय योजनाओं की डिग्गियों में पानी की आपूर्ति रोक दी है। इन तीनों नहरों के पानी का उपयोग प्रदेश के दस जिलों में पेयजल के रूप में हो रहा है। नहरों के पानी में प्रदूषण का स्तर जांचने के लिए जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने दोनों जिलों में पानी के नमूने लिए हैं। इसके नतीजे 48 घंटे बाद आएंगे और उसके बाद ही जलप्रदाय योजनाओं की डिग्गियों में पानी की आपूर्ति के बारे में निर्णय किया जाएगा। अगर पानी पीने लायक नहीं हुआ तो प्रदेश के दस जिले जल संकट की चपेट में आ जाएंगे।

पंजाब के बटाला जिले के गांव कीड़ी अफगाना में चड्ढा शुगर एवं वाइन मिल के टैंकों में भरा लाखों टन शीरा 16 मई को अत्यधिक तापमान के कारण उफन कर बाहर आ गया और मिल के अपशिष्टों की निकासी के लिए बनाए गए नाले से होता हुआ व्यास नदी के पानी में मिल गया। मिल से बहे शीरे की परत व्यास नदी के चालीस पचास किलोमीटर क्षेत्र में फैल गई।–अब यह पानी हरिके हैडवर्क्स होते हुए राजस्थान की नहरों में आ रहा है।

जल संकट की आशंका :–

पंजाब से मिली जानकारी के अनुसार हरिके हैडवर्क्स पर अभी प्रदूषित पानी की मात्रा एक लाख क्यूसेक से अधिक है। राजस्थान और पंजाब की नहरों के लिए प्रतिदिन ग्यारह हजार क्यूसेक के करीब पानी पंजाब और राजस्थान की नहरों में छोड़ा जा रहा है। इस हिसाब से प्रदूषित पानी के खपने में कम से कम दस दिन लग जाएंगे। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की ओर से लिए गए पानी के नमूनों की जांच में नहरों में आ रहा पानी पीने लायक नहीं पाया गया तो प्रदेश के दस जिलों में पेयजल का संकट खड़ा हो सकता है। मुद्दा गंभीर, सरकार गंभीर नहीं सतलुज और व्यास नदियों के प्रदूषण का यह मुद्दा गंभीर है। लेकिन न तो इस पर पंजाब सरकार गंभीर है और न ही राजस्थान सरकार। नतीजा सामने है। पंजाब के कई जिले आज कैंसर की चपेट में हैं। वहाँ कैंसर महामारी का रूप ले चुका है। भटिंडा से बीकानेर जाने वाली एक यात्री गाड़ी का नाम ही कैंसर ट्रेन हो गया है। कुछ ऐसी ही स्थिति श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में भी बन रही है। पिछले कई सालों में इन दोनों जिलों में कैंसर रोगियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। हनुमानगढ़ जिले की टिब्बी तहसील के एक गाँव में तो कैंसर रोगियों की संख्या राष्ट्रीय औसत से ज्यादा पाई गई है। पंजाब से गंगनहर, भाखड़ा और इंदिरा गांधी नहरों के माध्यम से आ रहे सतलुज और व्यास नदियों के पानी को राजस्थान के आठ जिलों की डेढ़ करोड़ से अधिक की आबादी पेयजल के रूप में उपयोग कर रही है। ऐसे में राजस्थान सरकार को बजाय कागजी दावे करने के जल प्रदूषण रोकने को पंजाब के साथ साझा योजना बनानी चाहिये। इसी में दोनों राज्यों का हित है।

खतरनाक अपशिष्ट :–

औद्योगिक इकाइयों का रासायनिक अपशिष्ट कितना खतरनाक है, इसका पता उन गाँवों में जाने पर पता चलता है जो रासायनिक अपशिष्टों को सतलुज और व्यास नदियों तक ले जाने वाले नाले के मुहाने पर बसे हैं। उन गाँवों में कैंसर की बीमारी तो आम है। नाले से उठने वाली गैस इतनी जहरीली है कि उसके असर से मकानों के लगे लोहे के गेटों में छेद हो गए हैं। यही स्थिति घरों के ऊपर लगी डिश एंटीना की छतरियों की है। नदियों में डाले जा रहे औद्योगिक इकाइयों के रासायनिक अपशिष्ट से जब लोहे में छेद हो सकते हैं तो मानव शरीर की क्या हालत होती होगी, इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधन व खनिज सम्पदा :–

किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रकृति द्वारा बिना किसी शुल्क के प्रदान किये गये या निःशुल्क दिए गए संसाधन प्राकृतिक संसाधन है। जिले के आर्थिक विकास में खनिजों का कृषि के साथ–साथ महत्व अत्यधिक है। खनिज संसाधनों से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। हनुमानगढ़ राजस्थान के मुख्य उत्पादक जिलों में उपर है। चावल उत्पादन में हनुमानगढ़ राजस्थान मे प्रथम है। गेहूं उत्पादन में द्वितीय स्थान पर है। अतः हनुमानगढ़ एक कृषि प्रधान जिला है। प्रारम्भिक काल में हनुमानगढ़ मे शोरा

उत्पादित किया जा रहा है। हनुमानगढ़ में 1965–66 में पल्लू एवं पूरबसर के आसपास के क्षेत्रों मे जिप्सम की खोज की गई तथा कुछ वर्षों पश्चात् उत्पादन कार्य हो गया। हनुमानगढ़ राजस्थान की 93 प्रतिशत एवं देश की 85 प्रतिशत जिप्सम की पूर्ति कर रहा है। हनुमानगढ़ जिले के नोहर, रावतसर, भादरा एवं पीलीबंगा तहसील के क्षेत्रों में जिप्सम उत्पादित किया जा रहा है।

पर्यावरणीय समस्यां के हल हेतु सुझाव :–

1. विद्यालय एवं महाविद्यालयों में "पर्यावरण अध्ययन" एक अनिवार्य विषय के रुप में पढ़ाया जाये।

2. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम तथा अन्य अधिनियमों का कड़ाई से पालन किया जाये।

3. वाहनों को प्रदूषण मुक्त कर सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा का उपयोग यथा संभव किया जाये।

4. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं विकास किया जाये।

5. वनों और जंगलों का विकास वृक्षारोपण करके किया जाये और वन प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाये।

6. वन्य प्राणी संरक्षण हेतु स्थानीय एवं राज्य स्तरीय प्रयास किये जाएं।

7. अपशिष्ट पदार्थो के पुनर्चक्रण एवं पुर्नउपयोग पर बल देकर अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन किया जाये।

8. पशु पालन को प्रोत्साहन एवं जैविक खाद का उपयोग कृषि हेतु किया जाये।

9. व्यक्तियों में धर्म, आध्यात्मिक एवं वैदिक कार्यों के प्रति सकारात्मक सोच एवंरुचि जाग्रित की जाये।

निष्कर्ष –

आज पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की गंभीर समस्याएं जन्म ले रही हैं। जिसमे योगदान व्यक्तियों का ही है। यदि समय रहते इसका निराकरण नहीं किया गया तो जीव–जंतुओं, वनस्पतियों एवं मानव के अस्तित्व पर विलुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो जाएगा। पर्यावरण को शुद्ध, स्वच्छ एवं संरक्षित रखने की नैतिक जिम्मेदारी हमारी ही है।

संदर्भ सूची :–

1. जैन, एम. (2013), पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका, रचना, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ एकादमी भोपाल पृ.क्र. 45
2. श्रीवास्तव, आर. (2004), आधुनिक पर्यावरण समस्याओं का वैदिक समाधान, रिसर्च लिंक जर्नल 14 (प्प्. 4) पृ.क्र. 87
3. तिवारी, ए. (2014) जनसंख्या वृद्धि एवं पर्यावरण सुरक्षा, कृष्ण कम्प्यूटर्स एंड प्रिंटर्स सागर, पृ.क्र. 237–38
4. राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी पत्रिका (2015) स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय लखनादौन पृ.क्र. 67